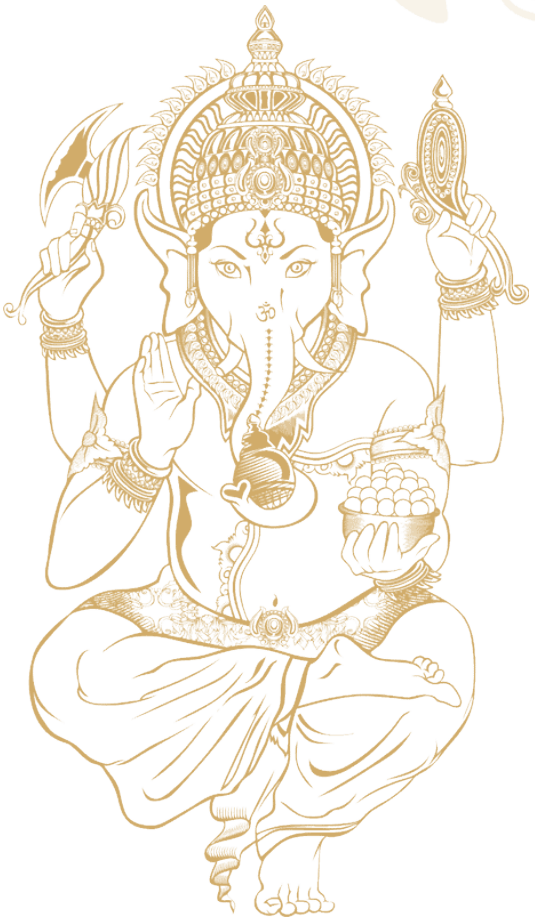

Mr.dharmpal ubba

13 Dec 1949

08:30 AM

Abohar

Model: Web-MyKundli

Order No: 119515601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**13/12/1949**
दिन	मंगलवार
जन्म समय	**08:30:00 घंटे**
इष्ट	02:53:42 घटी
स्थान	**Abohar**
राज्य	Punjab
देश	India

अक्षांश	30:09:00 उत्तर
रेखांश	74:11:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:33:16 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	07:56:44 घंटे
वेलान्तर	00:05:54 घंटे
साम्पातिक काल	13:22:37 घंटे
सूर्योदय	07:20:31 घंटे
सूर्यास्त	17:34:05 घंटे
दिनमान	10:13:34 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्य के अंश	27:37:14 वृश्चिक
लग्न के अंश	12:29:12 धनु

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	धनु - गुरु
राशि-स्वामी	**सिंह - सूर्य**
नक्षत्र-चरण	**उ०फाल्गुनी - 1**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	प्रीति
करण	कौलव
गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	टे-टेकचंद
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1871	मार्गशीर्ष	22
पंजाबी	संवत : 2006	मार्गशीर्ष	29
बंगाली	सन् : 1356	मार्गशीर्ष	27
तमिल	संवत : 2006	कार्तिगई	28
केरल	कोल्लम : 1125	वृश्चिकम	28
नेपाली	संवत : 2006	मार्गशीर्ष	28
चैत्रादि	संवत : 2006	पौष	कृष्ण 8
कार्तिकादि	संवत : 2006	मार्गशीर्ष	कृष्ण 8

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ___: 8
तिथि समाप्ति काल _____: 18:26:57
जन्म तिथि _____: 8
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ___: उ०फाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 28:38:15 घंटे
जन्म योग _____: उ०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग ___: प्रीति
योग समाप्ति काल _____: 09:45:31 घंटे
जन्म योग _____: प्रीति
सूर्योदय कालीन करण ___: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 18:26:57 घंटे
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 06:54:25
भभोग _____: 57:15:03
भोग्य दशा काल _____: सूर्य 5 वर्ष 3 मा 11 दि

घात चक्र

मास _____: ज्येष्ठ
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: मूल
योग _____: धृति
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मेष
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: धनु
चन्द्र _____: मकर
मंगल _____: मकर
बुध _____: तुला
गुरु _____: कुम्भ
शुक्र _____: मीन
शनि _____: वृश्चिक
राहु _____: मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

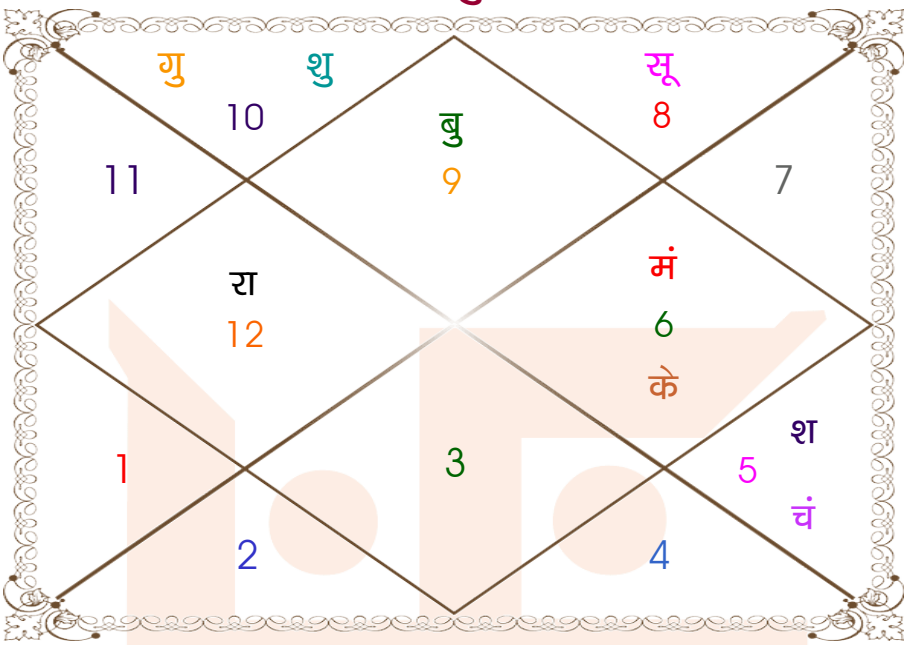

चन्द्र कुंडली

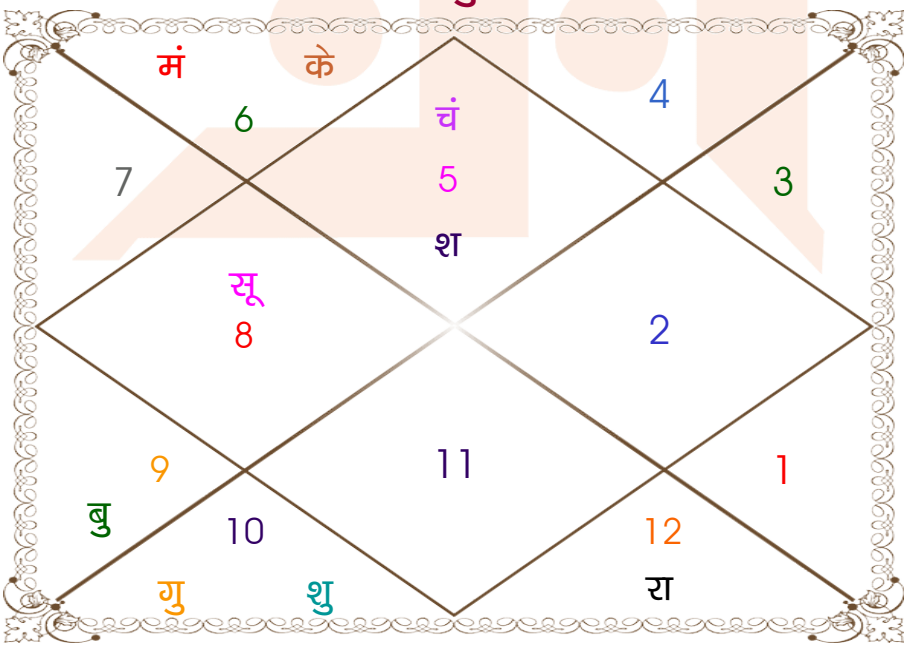

vedicastrologyhrl
Jaitsar 335702
Shri gangangar (Rajasthan)

9376120909
vedicastrologyhrl@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

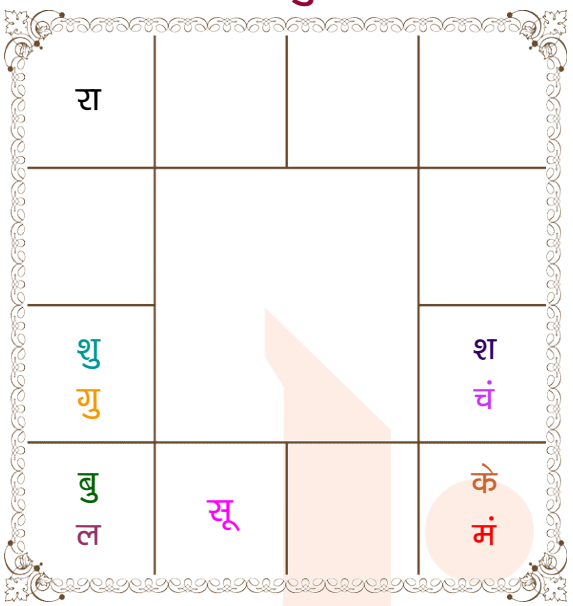

लग्न कुंडली

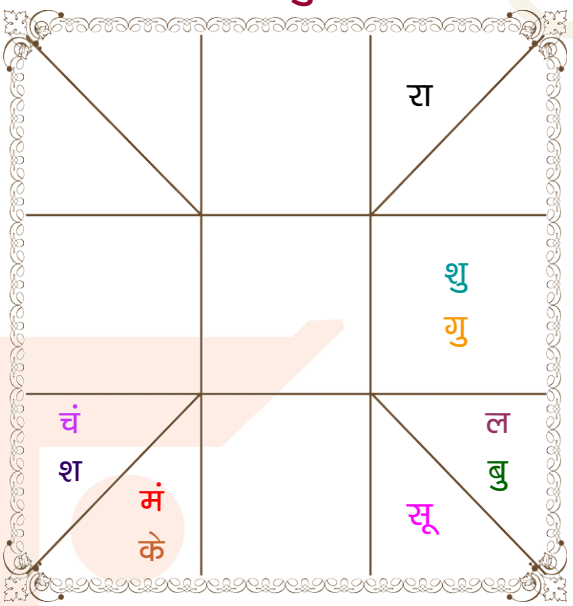

विंशोत्तरी
सूर्य 5वर्ष 3मा 11दि

सूर्य

13/12/1949

25/03/2069

सूर्य	26/03/1955
चन्द्र	25/03/1965
मंगल	25/03/1972
राहु	26/03/1990
गुरु	26/03/2006
शनि	25/03/2025
बुध	26/03/2042
केतु	25/03/2049
शुक्र	25/03/2069

योगिनी
सिद्धा 6वर्ष 1मा 28दि

सिद्धा

10/02/2021

10/02/2028

सिद्धा	22/06/2022
संकटा	11/01/2024
मंगला	22/03/2024
पिंगला	11/08/2024
धान्या	12/03/2025
भ्रामरी	21/12/2025
भद्रिका	11/12/2026
उल्का	10/02/2028

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	12:29:12	341:37:19	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	---
सूर्य			वृश्चि	27:37:14	01:01:01	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	गुरु	मित्र राशि
चंद्र			सिंह	28:15:51	13:53:25	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	चंद्र	मित्र राशि
मंगल			कन्या	01:15:19	00:27:12	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	शत्रु राशि
बुध		अ	धनु	09:15:58	01:33:16	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	सम राशि
गुरु			मक	09:16:00	00:12:21	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	नीच राशि
शुक्र			मक	12:33:43	00:47:04	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	मित्र राशि
शनि			सिंह	26:00:59	00:01:52	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	केतु	शत्रु राशि
राहु			मीन	21:00:08	00:00:03	रेवती	2	27	गुरु	बुध	शुक्र	सम राशि
केतु			कन्या	21:00:08	00:00:03	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष	व		मिथु	10:19:56	00:02:30	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	गुरु	---
नेप			कन्या	23:49:15	00:01:13	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	मंगल	---
प्लूटो	व		कर्क	24:54:54	00:00:39	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	---
दशम भाव			कन्या	29:10:49	--	चित्रा	--	14	बुध	मंगल	शनि	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:09:24

लग्न-चलित

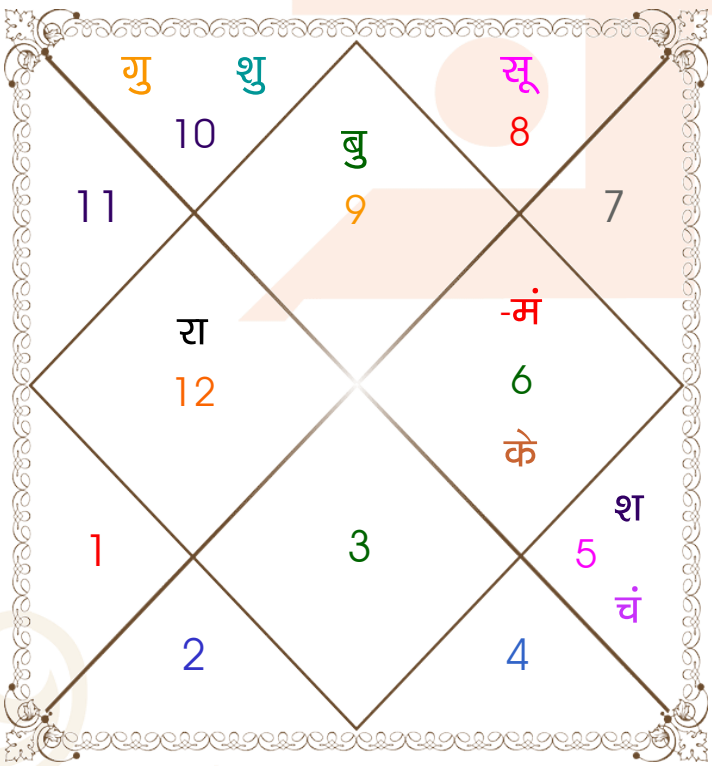

चन्द्र कुंडली

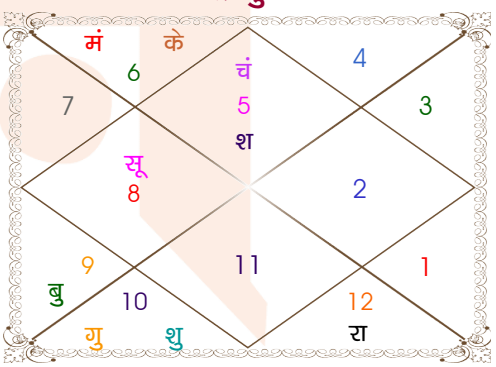

नवमांश कुंडली

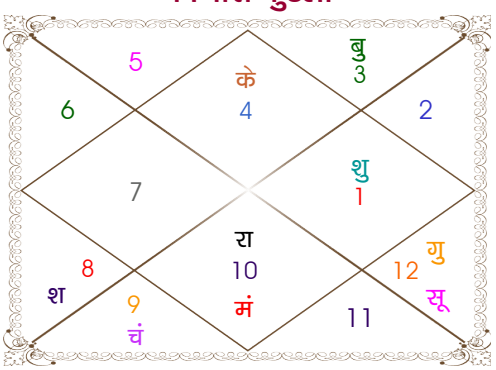

vedicastrologyhrl
Jaitsar 335702
Shri gangangar (Rajasthan)

9376120909
vedicastrologyhrl@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	धनु	00:16:08	धनु	12:29:12
2	मकर	00:16:08	मकर	18:03:04
3	कुम्भ	05:50:00	कुम्भ	23:36:56
4	मीन	11:23:53	मीन	29:10:49
5	मेष	11:23:53	मेष	23:36:56
6	वृष	05:50:00	वृष	18:03:04
7	मिथुन	00:16:08	मिथुन	12:29:12
8	कर्क	00:16:08	कर्क	18:03:04
9	सिंह	05:50:00	सिंह	23:36:56
10	कन्या	11:23:53	कन्या	29:10:49
11	तुला	11:23:53	तुला	23:36:56
12	वृश्चिक	05:50:00	वृश्चिक	18:03:04

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	12:29:12
2	मकर	18:02:10
3	कुम्भ	25:44:53
4	मीन	29:10:49
5	मेष	26:24:11
6	वृष	19:43:27
7	मिथुन	12:29:12
8	कर्क	18:02:10
9	सिंह	25:44:53
10	कन्या	29:10:49
11	तुला	26:24:11
12	वृश्चिक	19:43:27

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी

चलित कुंडली

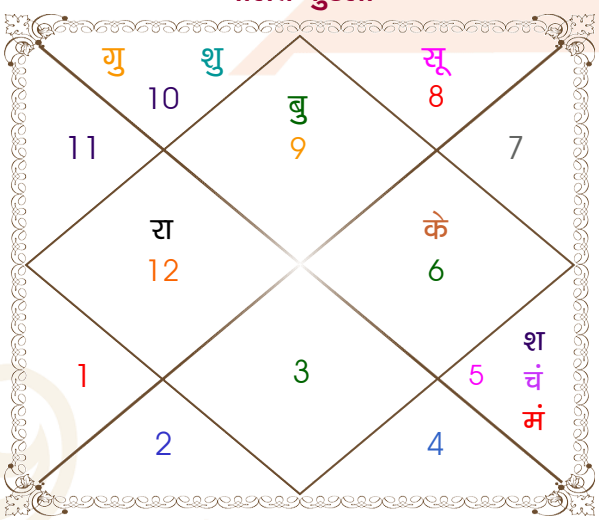

भाव कुंडली

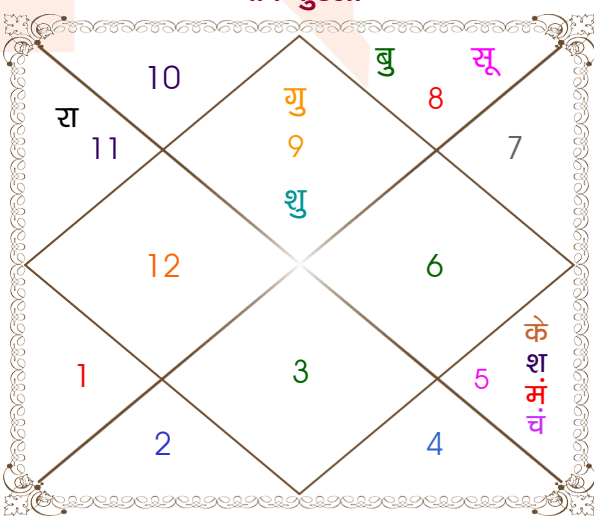

vedicastrologyhrl
Jaitsar 335702
Shri gangangar (Rajasthan)

9376120909
vedicastrologyhrl@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 5 वर्ष 3 मास 11 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
13/12/1949		26/03/1955		25/03/1965		25/03/1972		26/03/1990	
26/03/1955		25/03/1965		25/03/1972		26/03/1990		26/03/2006	
	13/12/1949	चंद्र	24/01/1956	मंगल	21/08/1965	राहु	06/12/1974	गुरु	13/05/1992
चंद्र	12/01/1950	मंगल	24/08/1956	राहु	09/09/1966	गुरु	01/05/1977	शनि	24/11/1994
मंगल	19/05/1950	राहु	23/02/1958	गुरु	16/08/1967	शनि	07/03/1980	बुध	01/03/1997
राहु	13/04/1951	गुरु	25/06/1959	शनि	24/09/1968	बुध	24/09/1982	केतु	05/02/1998
गुरु	30/01/1952	शनि	23/01/1961	बुध	21/09/1969	केतु	13/10/1983	शुक्र	06/10/2000
शनि	11/01/1953	बुध	25/06/1962	केतु	17/02/1970	शुक्र	12/10/1986	सूर्य	25/07/2001
बुध	18/11/1953	केतु	24/01/1963	शुक्र	19/04/1971	सूर्य	06/09/1987	चंद्र	24/11/2002
केतु	26/03/1954	शुक्र	24/09/1964	सूर्य	25/08/1971	चंद्र	07/03/1989	मंगल	31/10/2003
शुक्र	26/03/1955	सूर्य	25/03/1965	चंद्र	25/03/1972	मंगल	26/03/1990	राहु	26/03/2006

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
26/03/2006		25/03/2025		26/03/2042		25/03/2049		25/03/2069	
25/03/2025		26/03/2042		25/03/2049		25/03/2069		00/00/0000	
शनि	28/03/2009	बुध	22/08/2027	केतु	22/08/2042	शुक्र	25/07/2052	सूर्य	13/07/2069
बुध	06/12/2011	केतु	18/08/2028	शुक्र	22/10/2043	सूर्य	25/07/2053	चंद्र	13/12/2069
केतु	14/01/2013	शुक्र	19/06/2031	सूर्य	27/02/2044	चंद्र	26/03/2055		00/00/0000
शुक्र	16/03/2016	सूर्य	24/04/2032	चंद्र	27/09/2044	मंगल	25/05/2056		00/00/0000
सूर्य	26/02/2017	चंद्र	24/09/2033	मंगल	23/02/2045	राहु	26/05/2059		00/00/0000
चंद्र	27/09/2018	मंगल	21/09/2034	राहु	13/03/2046	गुरु	24/01/2062		00/00/0000
मंगल	06/11/2019	राहु	10/04/2037	गुरु	17/02/2047	शनि	25/03/2065		00/00/0000
राहु	12/09/2022	गुरु	16/07/2039	शनि	28/03/2048	बुध	24/01/2068		00/00/0000
गुरु	25/03/2025	शनि	26/03/2042	बुध	25/03/2049	केतु	25/03/2069		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 5 वर्ष 3 मा 9 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
25/03/2025		22/08/2027		18/08/2028		19/06/2031		24/04/2032	
22/08/2027		18/08/2028		19/06/2031		24/04/2032		24/09/2033	
बुध	28/07/2025	केतु	12/09/2027	शुक्र	07/02/2029	सूर्य	05/07/2031	चंद्र	07/06/2032
केतु	17/09/2025	शुक्र	11/11/2027	सूर्य	30/03/2029	चंद्र	30/07/2031	मंगल	07/07/2032
शुक्र	11/02/2026	सूर्य	30/11/2027	चंद्र	25/06/2029	मंगल	18/08/2031	राहु	22/09/2032
सूर्य	27/03/2026	चंद्र	30/12/2027	मंगल	24/08/2029	राहु	03/10/2031	गुरु	30/11/2032
चंद्र	08/06/2026	मंगल	20/01/2028	राहु	26/01/2030	गुरु	13/11/2031	शनि	20/02/2033
मंगल	29/07/2026	राहु	14/03/2028	गुरु	13/06/2030	शनि	02/01/2032	बुध	05/05/2033
राहु	08/12/2026	गुरु	01/05/2028	शनि	24/11/2030	बुध	15/02/2032	केतु	04/06/2033
गुरु	05/04/2027	शनि	28/06/2028	बुध	20/04/2031	केतु	04/03/2032	शुक्र	29/08/2033
शनि	22/08/2027	बुध	18/08/2028	केतु	19/06/2031	शुक्र	24/04/2032	सूर्य	24/09/2033

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
24/09/2033		21/09/2034		10/04/2037		16/07/2039		26/03/2042	
21/09/2034		10/04/2037		16/07/2039		26/03/2042		22/08/2042	
मंगल	15/10/2033	राहु	08/02/2035	गुरु	29/07/2037	शनि	19/12/2039	केतु	03/04/2042
राहु	08/12/2033	गुरु	12/06/2035	शनि	07/12/2037	बुध	06/05/2040	शुक्र	28/04/2042
गुरु	26/01/2034	शनि	06/11/2035	बुध	03/04/2038	केतु	03/07/2040	सूर्य	06/05/2042
शनि	24/03/2034	बुध	17/03/2036	केतु	22/05/2038	शुक्र	14/12/2040	चंद्र	18/05/2042
बुध	14/05/2034	केतु	11/05/2036	शुक्र	07/10/2038	सूर्य	01/02/2041	मंगल	27/05/2042
केतु	04/06/2034	शुक्र	13/10/2036	सूर्य	17/11/2038	चंद्र	24/04/2041	राहु	18/06/2042
शुक्र	04/08/2034	सूर्य	29/11/2036	चंद्र	25/01/2039	मंगल	20/06/2041	गुरु	08/07/2042
सूर्य	22/08/2034	चंद्र	14/02/2037	मंगल	14/03/2039	राहु	14/11/2041	शनि	01/08/2042
चंद्र	21/09/2034	मंगल	10/04/2037	राहु	16/07/2039	गुरु	26/03/2042	बुध	22/08/2042

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
22/08/2042		22/10/2043		27/02/2044		27/09/2044		23/02/2045	
22/10/2043		27/02/2044		27/09/2044		23/02/2045		13/03/2046	
शुक्र	01/11/2042	सूर्य	28/10/2043	चंद्र	15/03/2044	मंगल	05/10/2044	राहु	21/04/2045
सूर्य	22/11/2042	चंद्र	08/11/2043	मंगल	28/03/2044	राहु	28/10/2044	गुरु	12/06/2045
चंद्र	28/12/2042	मंगल	15/11/2043	राहु	29/04/2044	गुरु	17/11/2044	शनि	11/08/2045
मंगल	21/01/2043	राहु	04/12/2043	गुरु	27/05/2044	शनि	10/12/2044	बुध	05/10/2045
राहु	26/03/2043	गुरु	22/12/2043	शनि	30/06/2044	बुध	31/12/2044	केतु	27/10/2045
गुरु	22/05/2043	शनि	11/01/2044	बुध	30/07/2044	केतु	09/01/2045	शुक्र	30/12/2045
शनि	29/07/2043	बुध	29/01/2044	केतु	12/08/2044	शुक्र	03/02/2045	सूर्य	18/01/2046
बुध	27/09/2043	केतु	05/02/2044	शुक्र	16/09/2044	सूर्य	10/02/2045	चंद्र	19/02/2046
केतु	22/10/2043	शुक्र	27/02/2044	सूर्य	27/09/2044	चंद्र	23/02/2045	मंगल	13/03/2046

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	3
मित्र अंक	1, 4, 6, 3
शत्रु अंक	7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	98%	धन, स्वास्थ्य, सुख
लहसुनिया	केतु	75%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	72%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख, कम खर्च
माणिक्य	सूर्य	67%	कम खर्च, भाग्योदय
पन्ना	बुध	67%	स्वास्थ्य, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	66%	सुख, धन
नीलम	शनि	64%	भाग्योदय, धन, पराक्रम
हीरा	शुक्र	52%	धन, शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन
मोती	चंद्र	22%	नेष्ट भाग्य, दुर्घटना

रत्न की शुभता

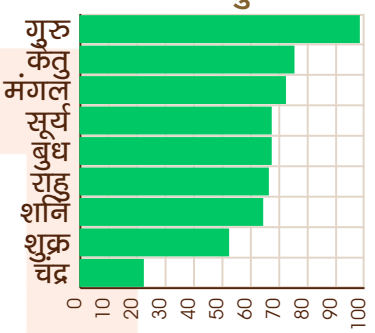

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	26/03/1955	80%	34%	78%	67%	100%	28%	52%	53%	62%
चंद्र	25/03/1965	73%	47%	72%	73%	98%	52%	64%	53%	62%
मंगल	25/03/1972	73%	34%	84%	55%	100%	52%	64%	53%	81%
राहु	26/03/1990	55%	0%	59%	67%	98%	58%	70%	78%	62%
गुरु	26/03/2006	73%	34%	78%	55%	100%	28%	64%	66%	75%
शनि	25/03/2025	55%	0%	59%	73%	98%	58%	77%	72%	62%
बुध	26/03/2042	73%	0%	72%	80%	98%	58%	64%	66%	75%
केतु	25/03/2049	55%	0%	78%	67%	98%	58%	52%	53%	88%
शुक्र	25/03/2069	55%	0%	72%	73%	98%	64%	70%	72%	81%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

साढेसाती द्वितीय ढैया	13/12/1949-20/09/1950	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	20/09/1950-25/11/1952	24/04/1953-21/08/1953	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	12/11/1955-08/02/1958	02/06/1958-07/11/1958	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	09/04/1966-03/11/1966	20/12/1966-17/06/1968	17/06/1968-07/03/1969
साढेसाती प्रथम ढैया	23/07/1975-07/09/1977	----------	----------

द्वितीय चक्र:

साढेसाती द्वितीय ढैया	07/09/1977-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	04/11/1979-15/03/1980	27/07/1980-06/10/1982	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007

तृतीय चक्र:

साढेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	बदनामी
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	व्यावसाय
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	व्यय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	सुख
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	दुर्घटना

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव में है। यह भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे। अपने कार्य क्षेत्र में सर्वदा उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही आप अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर किसी उच्च प्रशासनिक पद इंजीनियरिंग, मेडिकल या होटल आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीय पुरुष समझें जाएंगे । आप अपने कार्यों के द्वारा विशिष्ट सम्मान एवं ख्याति भी अर्जित करेंगे। आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आपको वे पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप भी उनकी आज्ञा का अनुपालन करेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पित या गर्मी से उत्पन्न रोगों के द्वारा कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप परिश्रम एवं उत्साह से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगे तथा आनन्द पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगे। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे परन्तु माता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप उनको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा साथ ही संतति की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। आपकी बुद्धि में भी यदा कदा उग्रता का भाव विद्यमान रहेगा लेकिन आप अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको न्यूनाधिक सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक प्रभावी व्यक्ति होंगे। जीवन में

धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से सर्वदा युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करने में समर्थ रहेंगे जिससे परिवार में शान्ति तथा सन्तुष्टि रहेगी। इसके अतिरिक्त सभी लोग आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में सूर्य, चन्द्र और मंगल के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यह्रदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ऊँ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्ययोगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील,धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरें से सहमत ही रहेंगे।

इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्त्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

नवम भाव मे शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं कूर होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(26/03/2006 - 25/03/2025)

शनि की महादशा उन्नीस वर्ष की है। आपकी कुण्डली में यह 26/03/2006 को आरम्भ और 25/03/2025 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि नवम भाव में स्थित है। शनी को एक अशुभ ग्रह कहा जाता है, पर यह अशुभ और शुभ दोनों का कार्य करता है। इसे बाधक ग्रह माना जाता है। इसके कारण फल की प्राप्ति में देर होती है, पर यह उससे वंचित नहीं करता। यह जातक को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है आपकी जन्मकुण्डली में नवम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि 11वें, 3रे तथा छठे भाव पर है और यह उनके कार्य को प्रभावित कर रहा है। नवम भाव, जिसमें यह स्थित है, विश्वास, भाग्य, ध्यान साधना, बलिदान, दानशीलता, अध्यापन, धर्म, लम्बी यात्रा, उच्च शिक्षा तथा विदेश यात्रा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

नवम भावम में स्थित महादशा स्वामी शनि की दृष्टि तृतीय और षष्ठम भावों पर है जिससे आपका स्वास्थ्य उत्तम और जीवन खुशहाल रहेगा। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी या स्वास्थ्य समस्या परेशान नहीं करेगी।

धन-सम्पत्ति :

शनि नवम भाव में स्थित है और भाव को शक्ति प्रदान करता है। आपकी धार्मिक तथा दान-पुण्य के कार्यों में रुचि होगी। आपकी विदेश यात्रा होगी जिसमें आप धन अर्जित करेंगे। चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि के लिए दशा अत्यन्त अनुकूल है।

व्यवसाय :

शनि के नवम भाव में स्थित होने के कारण आप अपना पुश्तैनी व्यवसाय अथवा उपदेशक, शिक्षक या चिकित्सक का कार्य करेंगे। आपके जीवन पर आपके पिता का पूर्ण प्रभाव रहेगा ओर आप दान-पुण्य करने वाले एक कर्त्तव्यनिष्ठ पुत्र होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपकी सहायता करेंगे और आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे जिससे आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। आपके समकक्ष साथियों की आपके पारिवारिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपकी पढ़ाई में दिलचस्पी है और आप अपनी शिक्षा पूरी करने में सफल होंगे।

महादशा :- बुध
(25/03/2025 - 26/03/2042)

बुध की महादशा 25/03/2025 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 26/03/2042 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध लग्न में स्थित है। बुध की दृष्टि सप्तम भाव पर है। इसके पहले आपकी 19 वर्ष की शनि की दशा चल रही थी। उस दशा के दौरान आपको समृद्धि की प्राप्ति, जीवन वृत्ति में प्रगति तथा यात्रा हुई होगी। बुध की इस दशा के दौरान जीवन का सुख, माता से लाभ, सुखमय वैवाहिक जीवन तथा जीवन में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

बुध के अपनी ही राशि में होने के कारण आपको उत्तम स्वास्थ्य तथा जीवनी शक्ति की प्राप्ति होगी। आप में शक्ति तथा उत्साह होगा तथा आप अशावादी और प्रसन्न होंगे। आपका व्यक्तित्व व रंगरूप आकर्षक होगा। अधिक परिश्रम तथा थकावट के कारण कोई संक्रामक बीमारी, बुखार अथवा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारी हो सकती है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आप स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, वैभानिकी तथा मस्तिष्क से संबद्ध सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर और हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को अचानक लाभ होगा, कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और

उच्च पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। आपको उच्चाधिकारियों का सद्भाव तथा अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको कठिन परिश्रम करना होगा। व्यापारी वाणिज्य व्यापार में कुशल होंगे और उन्हें अच्छा लाभ मिलेगा। आर्थिक-समृद्धि तथा जीवन-वृत्ति में उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में जीवन तथा वाहन का सुख मिलेगा। बुध की दशा के दौरान आपको सभी सुख, माता से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपकी जमीन-जायदाद में भी वृद्धि होगी। सम्पत्ति के सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। सूर्य की अन्तर्दशा में छोटी तथा शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपनी परीक्षा में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा व्यापार में प्रवीण होंगे। आप तेज हैं और अपनी वाक्पटुता के कारण जाने जाएंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा ललितकला में भी आपकी रुची होगी। आप तेज, कूटनीतिज्ञ, व्यवहार कुशल, सर्वतोमुखी हैं और विविध विषयों में रुचि रखते हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और वे उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे। उनके साथ आपका संबंध बहुत सुन्दर रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा होगी और उन्हें सम्पत्ति तथा साझेदारी में लाभ की प्राप्ति होगी। जीवनसाथी के साथ आपका संबंध अत्यना मधुर रहेगा। आपकी माता का जीवन अत्यन्त सफल रहेगा और उन्हें सम्पत्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके पिता का सट्टे तथा ऊँचे कारोबार में निवेश सफल रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विभिन्न स्रोतों से लाभ, उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे। आपके बड़े भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और उन्हें सम्पत्ति तथा माता से लाभ की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर होंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की मुख्य दशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और आपको सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे केतु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। शुक्र के कारण आपको बच्चों से सुख तथा सट्टे में लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएं होंगी जबकि उसके बाद आनेवाली चन्द्रदशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में लाभ तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि राहु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरू के फलस्वरूप आपको साझेदारों से लाभ तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान कुछ परिवर्तन होगा और धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अंर्तदशा :- बुध - बुध
(25/03/2025 - 22/08/2027)

आपके लिए बुध की महादशा 25/03/2025 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 25/03/2025 को प्रारंभ होकर 22/08/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको अपने ज्ञान के कारण प्रसिद्धि मिलेगी। सद्गुणों में वृद्धि होगी। ज्ञानार्जन उत्तम होगा। वाक्शक्ति प्रभावशाली होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार में सफलता मिलेगी। जीवनसाथी और व्यापार में साझेदार से संबंध मधुर रहेंगे।

आपके जीवनसाथी नया व्यापार प्रारंभ कर सकते हैं या वर्तमान कार्य का विस्तार हो सकता है। आपके पिता को निवेश या सट्टेबाजी में लाभ हो सकता है। माता को कार्यों में सफलता मिलेगी, धन का लाभ होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए नये मित्र, धन, शिशु का जन्म, लघु यात्राएं, कार्यों में सफलता, नयी योजनाओं का संकेत है। आपकी संतान को उच्चशिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। अगर वे सेवारत हैं तो ज्ञान-विज्ञान के कार्यों से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद मिल सकता है; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को अच्छा लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- बुध - केतु
(22/08/2027 - 18/08/2028)

आपके लिए बुध की महादशा 25/03/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 22/08/2027 को प्रारंभ होकर 18/08/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसिद्ध होंगे, साहस का परिचय देंगे। खुश रहेंगे। ज्ञानार्जन में रुचि होगी। माता-पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। तीर्थयात्रा हो सकती है। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। शिक्षा उत्तम होगी। माता से संबंध सकारात्मक रहेंगे। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, वाहन सुख रहेगा। पुरखों की जायदाद प्राप्त हो सकती है। बहुत सारे मित्र होंगे। अध्यात्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी सफल रहेंगे, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता धनी और भाग्यशाली होंगे। माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ, खर्चे और यात्रा का योग है।

आपकी संतान कृतसंकल्प होगी और लक्ष्य को प्राप्त करेगी। स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा, मामा से खुशियां मिलेंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी; सम्मान में वृद्धि होगी। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए मंदिर में दान दें।

अंर्तदशा :– बुध – शुक्र
(18/08/2028 - 19/06/2031)

आपके लिए बुध की महादशा 25/03/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 18/08/2028 को प्रारंभ होकर 19/06/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आपका घरेलू जीवन सुखी रहेगा। भोग-विलास के साधन उपलब्ध होंगे। विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा। मृदुवाणी के लिए प्रशंसा होगी। कला और साहित्य में रुचि होगी। प्रसिद्ध और धनी बनेंगे। रिश्तेदार सहायता करेंगे। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। वसीयत आदि से धनलाभ हो सकता है। साझेदार या जीवनसाथी के माध्यम से धनागम हो सकता है। अध्यात्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी को साझेदार या विरासत से धनलाभ हो सकता है। आपके पिता स्पर्धियों पर विजयी होंगे। माता सफल, भाग्यशाली और लोकप्रिय होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए शत्रुओं पर विजय, उच्च पद, सुखद यात्राएं, वाहन का संकेत है।

आपकी संतान लोकप्रिय, सफल, प्रसन्न होगी; परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो आय अच्छी होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाता धनी बनेंगे। व्यापारियों के कार्य में परिवर्तन हो सकता है, अचानक लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्रों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए श्वेत वस्त्र, चावल और दही का दान करें।